आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 335 ARYA SABHA MAURITIUS *11th June to 27th June 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

हे नारी! हे माता! तू श्रेष्ठ है

ओ३म् मूर्द्धासि राड् ध्रुवासि धरूणा धर्त्र्यसि धरणी ।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा ।।

यजुर्वेद १४/२१

O FEMME, MÈRE DE FAMILLE TU ES SUPRÊME

Om Murddhasi rād dhruvāsi dharunā dhartryasi dharanee
Ayushe tvā varchase tvā krishyai tvā kshemāya tvā.

Yajurvéda 14/21

Glossaire / Shabdārtha

O femme, mère de famille ! Tu es, **murdhā** – excellente comme le soleil, **asi** – tu es, **rāt** – rayonnante comme le soleil, **dhruvā** – pure, ferme et calme, **asi** – c'est toi qui, **dharuna** – élèves et nourris les enfants, **dharani** – tel un soutien, ou un pilier comme la terre qui nous héberge, **asi** – tu es, **dhartri** – celle qui s'occupe des enfants et les nourrit, **tvā** – c'est toi, **āyushe** – pour la longévité (une longue vie), **varchasé** – pour la nourriture, **krishyai** – pour l'agriculture – (les plantes, les légumes, les fruits etc), **kshemāya** – pour la protection et la paix, **tvā** – que j'accueille, je te bénis et je te soutiens.

Avant – propos

Certains hommes, souffrant du complexe de supériorité, méprisent la femme et la dénomme 'le sexe faible', croyant qu'elle a moins de sagesse et de force physique en comparaison à l'homme. Ils ont injustement cru que la femme est inférieure à l'homme et dépend de lui pour sa subsistance (avoir de quoi se nourrir, s'habiller, loger et autres aménités essentielles de la vie). Ils sont aussi d'avis que le chef de famille doit être un homme plutôt qu'une femme, parce qu'ils croient que la capacité d'un homme est supérieure à celle d'une femme.

Cependant ce verset du Yajur Veda les prend à contre-pied (les contredit, leur donne tort) et démolit tous leurs arguments farfelus. Nos livres sacrés, les Védas, tiennent la femme en très grande estime. Ils relèvent son statut et l'exaltent.

Selon les préceptes Védiques la femme est une personnalité à part entière exceptionnelle et dotée de nobles vertus. C'est elle, en tant que chef de famille, qui gère intelligemment la maison, nourrit soigneusement tous les membres de la famille, préserve son honneur et sa dignité, et transmet les valeurs universelles.

C'est elle qui est la première enseignante (guru) de l'homme. La toute première école de l'homme est nulle autre que les genoux douillets (très confortables) de la maman (maa ki god).

La plus grande économiste de la maison est sans aucun doute la femme. Elle sait joindre les deux bouts judicieusement. Tout comme la terre qui soutient et nourrit tout le monde, une femme vertueuse est le soutien voire le pilier par excellence de la famille. Ainsi elle devient la cheville ouvrière, le symbole ou le havre de la paix et de la prospérité.

Interprétation / Anushilan

Dans ce verset du Yajurveda le Seigneur s'adresse à la femme vertueuse :
O femme ! Tu es rayonnante comme le soleil !
Tu es aussi pure, calme et resplendissante que cet astre glorieux.
Tu élèves, tu nourris et tu protèges tes enfants tout comme la terre qui soutient et pourvoit au besoin de toutes ses créatures.
Je te bénis et je t'accorde la longévité (une longue vie) !
Tu seras toujours à l'abri du besoin car je mettrai à ta portée de la nourriture y compris l'agriculture.
Tu bénéficieras de ma protection et tu jouiras de la paix, du bonheur et de la prospérité dans ta vie familiale !

N. Ghoorah

Juin 2016 : Le mois consacré à l'étude du Satyārtha Prakāsh

Message de l'Arya Sabha

L'Arya Sabha Mauritius a proclamé le mois de juin comme un période dédiée à l'étude approfondie du Satyārtha Prakāsh (La Lumière sur la Définition de la Vérité). Je fais un pressant appel à tous d'apporter sa pierre à l'édifice qu'est l'Arya Samaj, un mouvement qui milite pour *'krinvanto vishwamaryam'* …transformer la société où les gens seront nobles en termes de pensées, paroles et pratiques (actions).

Le Satyārtha Prakāsh est un chef-d'œuvre écrit par Maharishi Dayānand Saraswati, le fondateur de l'Arya Samaj. C'est un guide qui nous nous permettra de différencier entre (i) le vrai et ce qui n'est pas vrai, (ii) la vertu (*dharma*) et l'immoralité, et (iii) la responsabilité et la négligence ou l'attitude irresponsable.

On y trouve les connaissances mondaines et spirituelles qui nous servent comme les deux rails du chemin de fer pour mener un train de vie équilibrée où le bien-être de tous soutiendra l'harmonie sociale.

L'auteur s'appuie sur les valeurs humaines énoncées par les sages et demande aux (i) parents, profs, leaders …et autres de mener une vie exemplaire (caractère, actions et autres traits) afin de servir de modèles ; et (ii) élèves de profiter de l'éducation afin de devenir des personnes dignes d'être appelés des êtres humains ou des citoyens exceptionnels de ce monde.

Ainsi nous réaliseront la vision de l'auteur *"...faire du bien au monde, c'est-á-dire améliorer l'aspect physique, moral / spirituel et social de tous."* De ce fait nous vivrons selon la formule de *'vasudaiva kutumbakam'* …la globalisation verra un monde où nous nous considérerons tous comme les membres d'une seule famille.

Note : *Vous pouvez vous procurer du livre 'Satyārtha Prakāsh' de la section vente de l'Arya Sabha Mauritius, Port Louis en hindi, anglais (complète ou simplifiée) et français.*

सम्पादकीय

स्वाध्याय का महत्व

परमात्मा ने मनुष्य को विद्या ग्रहण करने की अपार शक्ति दी है। दर्शन, श्रवण, वाचन, मनन, चिन्तन तथा पठन-पाठन करके ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता दी है। मानव-सुधार निमित्त विभिन्न प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की है। अपने बारे में जानने और अपने गुण-दोषों को परखने के लिए स्वाध्याय करने का अवसर दिया है। जो व्यक्ति स्वाध्यायशील होते हैं, वे अनुभवी, ज्ञानी और बुद्धिजीवी होकर प्रगति पथ पर अग्रसर होते जाते हैं।

मनुष्य जीवन के निर्माण में स्वाध्याय का बड़ा ही महत्व है। एक स्वाध्यायशील व्यक्ति के आचार-विचार, व्यवहार आदि उत्तम होते हैं। वह जितना अधिक स्वाध्याय पर ध्यान देता है, उतना ही उसका बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक विकास होता जाता है। आत्मचिन्तन का दूसरा नाम स्वाध्याय है। अपने जीवनोन्नति के लिए नित्य स्वाध्याय और सत्संग करना मानव-कर्त्तव्य है।

हमारे जीवन में आत्मज्ञान के प्रभाव से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है। जिस आदमी की आत्मिक-शक्ति तीव्र होती है, वह हर प्रकार के दोषों, पापों और कुकर्मों से दूर रहता है, अधर्म से बचा रहता है। वह स्वाध्याय के बल पर सोच-विचार, तर्क-वितर्क और चिन्तन करने की योग्यता प्राप्त करता रहता है, क्योंकि स्वाध्याय और सत्संग जीवनोद्धार में अति सहायक होते हैं। शुद्ध, पवित्र और सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए नियमित रूप से स्वाध्याय करना अति अनिवार्य है।

धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए उत्तम और धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना बड़ा ही उपयोगी है ।

स्वाध्याय का दूसरा अर्थ है – अपने आपका अध्ययन करना, अपने गुण-दोषों को परखना और सुधार करना। हम इन्सान हैं, हम से नित्य कोई न कोई भूल या गलती होती रहती है। अपने दोषों के निवारण में स्वाध्याय करना अति आवश्यक है।

स्वाध्याय में बड़ी शक्ति होती है। शुद्ध, पवित्र और सुखी जीवन जीने के लिए सत्संग और स्वाध्याय दोनों बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। इनसे मनुष्य ग़लत सोच-विचार, पाप, अधर्म आदि से बचा रहता है। कहा जाता है कि सत्संग और स्वाध्याय आत्मा का भोजन है। स्वाध्याय से आत्म-ज्ञान बढ़ता है और अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है। सत्संग और स्वाध्याय द्वारा जिसका आत्म-ज्ञान जागा रहता है, वह उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जाता है।

स्वाध्याय से हमारी बौद्धिक, आत्मिक और मानसिक शक्ति बढ़ती जाती है। अतः स्वाध्याय करना परम आवश्यक है। आज के इस वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर, इन्टरनेट, ईमेल आदि नवीनतम साधनों द्वारा मनोरंजन के साधन हमें उपलब्ध हो रहे हैं, जिसके कारण वे उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय में ध्यान नहीं देते हैं। अलमारियों में ऐसे उपयोगी ग्रन्थ बन्द पड़े रहते हैं। उन ग्रन्थों को खोलकर पढ़ने वाले पाठक बहुत कम दिखाई देते हैं, ज्ञान के भण्डार से हम दूर होते जा रहे हैं। इन कारणों से हमारे बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक विकास में वृद्धि नहीं हो रही है। अतः सत्संग और स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ये दोनों हमारे जीवन -निर्माण के स्तम्भ हैं। इनके बिना सफलता प्राप्त करना बड़ा ही कठिन है। सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती के उपलक्ष्य में हम अवसर पाकर सत्यार्थ प्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का गहरा अध्ययन करें। उस पर तर्क-वितर्क करें, प्रश्नोत्तरों द्वारा सत्य-असत्य की पहचान करें और दूसरों को स्वाध्याय शील बनने के लिए प्रेरित करें। हम सभी का भला होगा ।

बालचन्द तानाकूर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

अपने एक लेख में हमने लिखा था कि स्वामी दयानन्द ने जब अपना सत्यार्थप्रकाश लिख दिया तो छपवाने के लिए राजा जयकृष्णदास सी.एस.आई ने काशी के प्रेस में प्रकाशनार्थ भेजा था। प्रेस का नाम था (लाईट) जिसका मालिक काशी ही के निवासी हरवंशलाल थे जो स्वामी जी से पूर्व परिचित थे। स्वामी जी के अनुयायी एवं भक्त होने के कारण स्वामी जी और उनमें पत्र व्यवहार भी होता था; जब स्वामी जी काशी के बाहर होते थे। मुं० मीमांसक जो स्वामी दयानन्द पर विशेषज्ञ थे, उन्होंने (ऋषि दयानन्द और उनके ग्रंथ) नामक पुस्तक में यह लिखा है। जीवनी लेखकों ने गलती से (लाईट) प्रेस लिख दिया है। लिखना चाहिए (स्टार) प्रेस काशी।

राजा जयकृष्ण दास काशी राज्य में डिप्टी कलकटेर थे। प्रश्न उठता है किसके टिप्टी थे? खोज करने के बाद पता चला, कलक्टर मिस्टर शेक्सपियर एक अंग्रेज थे। उसी के उप-कलक्टर स्वामी भक्त राजा जयकिशनदास सी.एस.ई थे। उन्हीं के मित्र थे सर अहमद खाँ जो काशी राज्य में सब मजिस्ट्रेट थे। स्वामी जी ने उनके बँगले में कई व्याख्यान भी दिये थे। यह बात भी जीवनी लेखकों ने लिखी है। उसी सर अहमद खाँ ने स्वामी जी को काशी के कलक्टर मिस्टर शेक्सपियर से मिलाया था और काशी नरेश से मुलाकात कराने को उद्यत किया था। एक व्याख्यान में स्वामी जी ने वेदों के अपौरुषयत्व पर दिया था जिसे सुनने के लिए काशी के अनेक पादरी भी आये थे। बड़े-बड़े ओहदों में काम करने वाले एक साथ उठते-बैठते थे इस लिए जब राजा जयकृष्णदास ने सत्यार्थ प्रकाश की पाण्डु लिपि प्रकाशित करने के लिए भेजी तो समुल्लास १३ और १४ रख लिए। दूसरे संस्करण में सभी १४ समुल्लासों के साथ स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश भी छपा था।

यह परिवर्तन उतना गम्भीर नहीं था जितना स्वामी जी के अनजान में उनके सिद्धान्तों के विरुद्ध सिद्धान्त स्वार्थवश पंडित जी ने भेज दिया प्रेस में छापने के लिए। पुस्तक छपकर आ जाने के बाद स्वामी जी ने संशोधन कर दिया पर कुछ नहीं कहा जहाँ तक मुझे स्वामी जी की जिवनियाँ पढ़ने का मौका मिला है मैंने किसी में भी ऐसी बातें नहीं पढ़ी कि पंडितों के स्वार्थपूर्ण भावना को पढ़-सुनकर कड़े शब्दों में उलाहना दी। स्वामी जी ऋषि पद पाने की ओर बढ़ गए थे। वे कड़े शब्दों का प्रयोग नहीं करते। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की उस प्रति को स्वयं पढ़कर जहाँ-जहाँ पंडितों ने अपने अवैदिक विचार डाल दिये थे उनको निकाला और दूसरा संस्करण उनके निर्वाण के बाद छपा। वही प्रति हम आज तक पढ़ते हैं और उसी प्रति का अनुवाद सबसे पहले डा० चिरंजीव भारद्वाज ने अंग्रेज़ी में किया था।

Mr. Girish Nunkoo, Mauritian High Commissioner to the United Kingdom

Arya Sabha Mauritius is deeply honoured by the appointment of Mr. Girish Nunkoo to the post of Mauritian High Commissioner to the United Kingdom. In that capacity he is accredited to Denmark, Finland, Ireland, Norway, Sweden and Holy See. He is also the Permanent Representative of Mauritius to the Commonwealth, International Maritime Organization, International Sugar Organization, International Institute for Democracy and Electoral Assistance.

His late father, Shri Moteelall Nunkoo was a renowned personality of the Arya Samaj movement in Mauritius. He had served as President of the Vacoas Arya Samaj and an active member of the Plaine Wilhems Arya Jila Parishad for many years.

Mr. Girish Nunkoo is an attorney-at-law since 1992, appearing in the various Courts and Tribunals of Mauritius instructing Barristers including Senior Members of the Bar and Queen's Counsels in almost all areas.

He has served as (i) Legal Advisers to various parastatal bodies, (ii) Director to the Board of the Development Bank of Mauritius, (iii) Auditor to the Law Society, and (iv) Commissioner for the Protection of Borrowers under the Borrower Protection Act 2007 with immunity privilege in succession of His Lordship Late Honourable Justice Robert Ahnee, former Judge of the Supreme Court of Mauritius.

He is member of the Law Society of Mauritius and listed on the Roll of Pupil Masters.

Arya Sabha hereby wishes His Excellency Girish Nunkoo a fruitful career as High Commissioner of Mauritius to the United Kingdom. May the Almighty grace him with perseverance to fulfil his material and spiritual desires which we trust will continue to be in line with : *'...do good to the whole world through the uplift of the physical, moral / spiritual and social standards of all.'*

Dr O.N. Gangoo
President, Arya Sabha Mauritius

फ़्लाक ज़िले में एक और महिला समाज की स्थापना

प्लेन दे ज़ेरसियीं फ़्लाक में पुरुष समाज लगभग पचहत्तर वर्षों से कार्यरत है। उन्नीस मार्च को फ़्लाक परिषद के सहयोग से अब एक महिला समाज वहाँ पर स्थापित किया गया।

उन्नीस को शाम चार बजे प्लेन दे ज़ेरसियीं समाज के आँगन में इस गतिविधि को भव्य रूप से मनायी गयी। पुरुष समाज के सहयोग से आर्य मन्दिर तथा पंडाल को ओ३म् के झण्डों से सजाया गया। भक्त लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। ठीक चार बजे पंडित रामदू और पंडिता बुझावन द्वारा यज्ञ हुआ। पंडिता ललीता कूंजा द्वारा भजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री राजेश्वर दयाल जी, मंत्री पृथिवीराज रूपन जी, पी.पी.एस. रामपर्ताब जी थे। परिषद् की ओर से श्रीमान् प्रभाकर जीऊथ जी द्वारा मंच संचालन हुआ। मुख्य अतिथियों का स्वागत फूलों के गुच्छों से किया गया। बीच-बीच में बच्चों ने कविताएँ सुनायीं।

सभा उपप्रधाना धनवन्ती रामचर्ण द्वारा महिला समाज का उद्घाटन हुआ। वहाँ की महिलाओं को प्रोत्साहन और आर्य महिला समाज बाँधने के लिए पंडिता बुझियावन पुष्पा जी और पंडिता नोबीन जी को विशेष धन्यवाद दिया गया। अन्त में आरती और शान्ति-पाठ द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी को प्रसाद और भोजन से सत्कार किया गया।

गतांक से आगे

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ : उद्भव, विकास एवं उनका सिंहावलोकन

श्रीमती शान्ति मोहाबीर,एम.ए.

'हिन्दुस्तानी' - १९०९

२ मार्च सन् १९१३ को प्रकाशित होनेवाले 'हिन्दुस्तानी' के संपादक, श्री राम अवध शर्मा थे (हिन्दुस्तानी १९१३)। मार्के की बात तो यह है कि तब तक यह पत्र साप्ताहिक ही था। मणिलाल डॉक्टर की प्रेरणा से अनेक हिन्दू पत्रकारिता की ओर मुखरित हुए। बुधन (इंद्रधनुष, अंक २८, पृ० ८४) के शब्दों में 'उनका बदला फ़ौलाद की तलवार से न होकर कलम या ज़बान से होता था, क्योंकि उनका व्यवसाय वकालत अथवा पत्रकारिता था, जो मानव-सेवा का विस्तृत क्षेत्र खोल देता है।

'आर्यसमाज और हिन्दी-विश्व संदर्भ में संदर्भ ग्रंथ' पुस्तक से चंद नयी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। इन्द्रनाथ (२००९, पृ० १२९) कहते हैं कि 'आरंभ में 'हिन्दुस्तानी' पत्र गुजराती, अंग्रेज़ी में निकलता था, फिर अंग्रेजी में, बाद में हिन्दी-अंग्रेज़ी में छपता था। हिन्दी विभाग के संपादक श्री नरसिंहदास थे। कुछ समय बाद वे अलग हो गये और अंत समय तक श्री गुरुप्रसाद दलजीतलाल जी संपादन कार्य करते थे।' श्री दलजीतलाल आर्यसमाज के संस्थापकों में से एक थे। अर्थात् 'हिन्दुस्तानी' के प्रकाशन में आर्यों का हाथ अवश्यमेव था। तभी यहाँ से जाते हुए मणिलाल डॉक्टर आर्यसमाज को अपना प्रेस दे गये। और उन्हें इस बात का पूर्ण आश्वासन था कि आर्यों के हाथों में यह देश सुरक्षित रहेगा।

मोरिशस आर्य पत्रिका - १९११

पं० काशीनाथ किष्टो द्वारा संपादित, सन् १९२४ में 'आर्य पत्रिका' का प्रकाशन होता था। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है, क्योंकि पोर्टलुई के राष्ट्रीय पुस्तकालय में तथा मॉरीशस आर्य सभा के अभिलेखागार में इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं। परन्तु सन् १९११ में प्रकाशित 'मोरिशस आर्य पत्रिका' की एक भी प्रति, अधूरी ही सही, कहीं भी उपलब्ध नहीं है। 'डोडो' पक्षी की तरह 'मोरिशस आर्य पत्रिका' लुप्त हो चुकी है। परन्तु पुनरावलोकन प्रक्रिया के दौरान शोधिका को अनेकों पुस्तकों में इसका उल्लेख प्राप्त हुआ है।

ओजस्वी कवि (मॉरीशस आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी-१९०३-२००३) जागासिंह सन् २००३ 'स्मारिका' पत्रिका के एक लेख में 'हिन्दुस्तानी','मोरिशस आर्य पत्रिका' और 'ओरियंटल गजट' की प्रतियों की सुरक्षा पर प्रश्न उठाते हुए कहते हैं कि –

"सन् १९११ से डेढ़ सौ वर्ष पहले की फ्रेंच और बाद की अंग्रेज़ी की दुर्लभ प्रकाशित सारी सामग्री अभिलेखागार में उपलब्ध है, मात्र 'हिन्दुस्तानी', 'मोरिशस आर्य पत्रिका' और 'ओरियन्टल गजट' की प्रतियाँ गायब हैं। या उन्हें सायास गायब कर दिया गया था।"

उनका यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है, क्योंकि राष्ट्रीय पुस्तकालय में 'हिन्दुस्तानी' पत्र के केवल दो अंक उपलब्ध हैं – एक पूरा, दूसरा अधूरा। सन् १९११ में प्रकाशित होने वाले 'मोरिशस आर्य पत्रिका' और सन् १९१२ में प्रकाशित होने वाले 'ओरियंटल गजट' का नामोनिशान नहीं है। उपलब्ध सामग्री प्रमाणित करती है कि 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का अस्तित्व था और इसका प्रकाशन आर्यसमाजियों द्वारा देश-सेवा निमित्त होता था।

इसका प्रमाण पंडित विश्वनाथ द्वारा रचित पुस्तक 'मोरिशस का इतिहास' में विद्यमान है। वे लिखते हैं –

"हिन्दुस्तानी बंद हुए आज सात-आठ वर्ष हो चुके हैं, पर उसने टापू की हिन्दी प्रजा में जो जागृति उत्पन्न की थी, वह कभी नष्ट नहीं हो सकती है, और उसका यह कार्य भारतीय प्रजा के लिये चिरस्मरणीय और अजरामर रहेगा..... इसके पश्चात् 'आर्य पत्रिका', 'ओरियंटल गजट', 'इंडोमोरेशियन', 'इंडियन मिसलेनी' आदि पत्रों का जन्म हुआ और मृत्यु भी हुई।"

(विश्वनाथ १९९८, पृ० १७६)

श्री रामधन पूरण विरचित 'मोरिशस आर्यसमाज का इतिहास' में भी इसका प्रमाण उपस्थित है। श्री पूरण को यह पुस्तक लिखने का विचार तथा प्रेरणा श्री दलजीतलाल से मिली थी। श्री खेमलाल लाला और श्री गुरुप्रसाद दलजीतलाल मित्र थे। सन् १९०३ में जब प्रथम बार के लिए क्यूर्पिप में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी तब श्री दलजीतलाल मंत्री पद पर नियुक्त हुए थे और श्री खेमलाल लाला प्रधान पद पर। *'मोरिशस आर्यसमाज का इतिहास'* नामक पुस्तक को भली-भाँति संपन्न करने के लिए श्री रामधन पूरण को सारी सामग्री श्री दलजीतलाल की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्रों से प्राप्त हुई थी। श्री दलजीतलाल की अंतिम इच्छा थी कि सभी हस्तलिखित कागज़ात और बही, जिनमें आर्यसमाज का विवरण था और जो उन्होंने स्वयं लिखा था, श्री पूरण को सौंप दी जाए। मार्के की बात यह है कि उन आवश्यक कागज़ातों में वह अमूल्य निधि भी विद्यमान थी, जो आज दुष्प्राप्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि उन कागज़-पत्रों में 'मोरिशस आर्य पत्रिका' की कई प्रतियाँ भी मौजूद थीं, जिनसे उद्धृत किये गये लेख 'मोरिशस आर्य समाज का इतिहास' पुस्तक का अभिन्न अंग हैं।

पूरण (पृ० ३७) के कथनानुसार 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का प्रकाशन १ जून १९११ को प्रारंभ हुआ था। श्री तोता लाला इसके प्रथम संपादक थे। बाद में स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने दो वर्षों तक इसका संपादन कार्य संभाला। यह पत्र हिन्दी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित होता था। इसका मुद्रण व प्रकाशन कार्य 'हिन्दुस्तानी प्रेस' से होता था। श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ द्वारा रचित, 'आर्य समाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में' में भी 'मोरिशस आर्य पत्रिका' के संपादकों का उल्लेख किया गया है। इन्द्रनाथ जी (२००१, पृ० २००) बताते हैं कि जब श्री खेमलाल अस्वस्थ हो गये थे तब स्वामी स्वतंत्रानंद ने 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का संपादन कार्य संपन्न किया था।

सन् १९२४ में, प्रकाशित 'आर्य पत्रिका' के प्रारंभिक अंक में 'दत्त' द्वारा लिखित 'वंदेमातरम्' शीर्षक लेख के अंतर्गत निम्न पंक्तियाँ ध्यान आकृष्ट करने योग्य हैं :–

"यही 'आर्य पत्रिका' पूर्व में कितनी लाभदायक थी, बाद में छिप गई । आज बड़ा आनंद के साथ कहना पड़ता है कि पुनरपि यह पत्र को महोपदेशक श्रीयुत पंडित जी खोज ढूँढ़कर प्रकाशित करने का प्रबंध किया।" (मोरिशस आर्य पत्रिका, २९ नवम्बर १९२४)

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

Behind The Curtain – The Special Ones

Shri Krishnaduth Seeburrun

This article is an attempt to bring to light those people who have quietly, silently and without any publicity weaved their efforts to the progress and enhancement of the Arya Samaj Movement in Mauritius. Their contribution is immense; it would be unfair not to talk on their behalf because these people will not boast of their feat. We, in a measure, have to acknowledge and pay tribute to them because, in many ways, they are the lifeline of our organization although they remain behind the screen.

It would be sad if people who gave their lifetime to a good cause are forgotten, whether alive or deceased. I still remember, at 'Belle-mare Ashram', there was a commemoration to pay tribute to a colossal figure, Dr Chiranjeev Bardwaj, FRCS, Dph for his huge contribution and one person from India was invited ; Dr Chiranjeev Bardwaj had a monument/statue erected in Port-Louis, at jardin Compagnie. Similarly, so many have contributed and thanks to them we have been expanding.

On our trips across the island, we see vestiges of the past left by great souls of a great time. They have gone but their marks have stood the test of time. They have made Arya Sabha a vibrant and living organisation – apart from the 360 branches spread, we also have huge institutions in every district.

Krishnaduth Seeburrun, also known as 'Baba', is one of such people. He will be celebrating his 76th birthday and 50 years at the service of Arya Samaj. From a State Primary School teacher to State Secondary Educator, he has built up with us at Arya Samaj Bch 298 at Moka, an infallible reputation of service and remains an undisputed charismatic figure of our family. Always positive and ready to help, he is available and he never disappoints.

His father, Ramkurrun Seeburrun, a staunch Arya Samajist well before World War II, groomed and brought up his children under the same umbrella. His contribution to Arya Samaj at a time when money was scarce will be remembered. It is said that parents who take along their children to an enlightened organisation like ours are blessed by good and principle-abiding children.

Apart from a Bachelor's Degree, Baba deliberately enrolled for an Advanced Diploma in Yoga offered by IGCIC. With this acquired skill he dispenses Yoga classes in 8 centres, now reduced to 2- one at Moka and the other at Belle-rose Arya Samaj. From 4.30 a.m., he is on his feet looking after cane fields and hydroponic sheds and the rest of the day is consumed in Samaj Service.

He never misses functions, ceremonies and programs at regional or national level; distance, time and even weather are not impediments to deter him. Krishnaduth Seeburrun says, "I feel good, elated and full of energy among brothers. Meeting, exchanging ideas and, above all, sharing a vegetarian meal is an opportunity not to be missed. My worries are doused and I enjoy the full span of life."

For our fortnightly Hawan, Baba is always present, ahead of everybody; he takes delight at preparing all food and delicacies at his own expenses and he has been doing it alone for decades. We are also proud that the President of Arya Sabha is a member of our branch and his short elocutions on sensitive matters provide food for though. Last, but not the least, Pandita Anjani Moheeputh, is a highly versed and learned person who officiates our Yajna and she has always something new and very pertinent to share.

Watched from a distance, an apple tree laden with mellow fruits displays a sight of envy and impels even the most stoic to appreciate its majestic beauty and grandeur– a feast for the eyes; however the roots and its other tributaries so essential to its development are hidden, invisible to our eyes and senses. Only those endowed with wisdom will discern the beauty and value of the unseen. Like the roots of the apple tree, Arya Samajists have silently, quietly and honourably worked to the development of our Samaj through donations, contributions and support. To these unsung and unheard players who stand behind the screen, who never boast of their sacrifice, we extend our sincere recognition and appreciation.

To the pioneers of this Samaj and other Samajs across the island, we express our gratitude for they started something ideal at a time many were ignorant of the great Arya Samaj movement. Lekhram Seenauth, retired Headmaster, along with Narainduth Seeburrun, Iswar Boodhun were the first group of people to engineer this branch with the fervent support of Ramkurrun Seeburrun. The coming of Dr. Oudaye Narain Gangoo at a later stage catalysed the construction of the Moka Arya Samaj. Lekhraj Seenauth remains the longest serving secretary and his devotion along with other members is remarkable.

Those who serve without any expectation are the special ones and they are bereft of any motive except to give. Like Baba Seeburrun and the pioneers of this Samaj, there are many over the island and we are grateful to them all, alive or deceased.

If you don't see them, take no worry, they see you more often than you do. Living as a true Aryan is a spiritual journey which we celebrate in our actions, words and intentions – it is a manifestation of all that is noble, great and universal.

Member of Bois Cheri Road Moka Arya Samaj Brch. No. 296

संसार में अनेक प्रकार के लोग

रमावध राम

इस संसार में कई प्रकार के ऐसे लोग पाये जाते हैं, जो औरों के दबाव में आकर प्रेम के बदले घृणा करने लगते हैं। भारतवर्ष में जातीय भेद-भाव के कारण भारतीय जनता अपनी परम्परा, संस्कृति को भूलकर आज स्वतंत्रता पाकर भी गैर भाषा, संस्कृति, असभ्यता अपना कर अधर्म की बेड़ियाँ पहन रखी हैं। जो देश कभी संसार के गुरु था, आज वह दूसरों का मुँह ताक रहा है। क्यों? इसलिए कि आपस की फूट और वैर के कारण।

अँग्रेज़ चले गए, पर अपनी अँग्रेज़ी छाप के साथ-साथ अपनी भाषा, रीति रिवाज़ भी छोड़ गए। आज भारत वर्ष में भाषा तथा वेश-भूषा भी लुप्त हो रही हैं। राजे-महाराजे के ज़माने में गरीबों को खूब लुटा गया। तथा कथिक ब्रह्मानों के दबाव में आकर, अपने भाई-बन्धु को नीच समझने लगे। छूट-अछूत की बीमारी इतनी फैल गई कि दूसरी जाति के प्रलोभन में आकर विधर्मी बनना पड़ा। ये सब हुआ कैसे ? मात्र प्रेम के बिना।

यह धन्य है कि स्वामी दयानन्द आये और उन्होंने सारा अन्धविश्वास समाप्त किया फिर भी सत्यार्थ प्रकाश के होते हुए भी लोग अंधकार में हैं – किसी कवि ने खूब कहा –

'कौन है अपना, कौन पराया,
दुनिया के भेद अभी तो कोई समझ नहीं पाया ।'
'जात-पाँत पूछे न कोई हरि को भजे,
सो हरि का होई।'

और एक कवि ने यह शिक्षा-प्रद गीत लिखा –

किसी की मुस्कुराहटों में हो मिसार,
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार,
किसी के वास्ते हो, तेरे दिल में प्यार,
दुनिया इसी का नाम है ।
वह है, प्रेम, प्रेम, प्रेम ।।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रमुख सिद्धान्त

पंडित यश्वन्तलाल चूड़ामणि,एम.एस.के, आर्य भूषण, प्रधान आर्य पुरोहित मण्डल

यह विश्व विदित बात है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वेद प्रचार अभियान में उन्हीं के रचे अमर ग्रन्थ **सत्यार्थ प्रकाश** का सबसे बड़ा योगदान रहा है। स्वामी जी वेद के जिन सिद्धान्तों को साधारण जनता तक पहुँचाना चाहते थे, सत्यार्थ प्रकाश उन्हीं सिद्धान्तों का एक निचोड़ है। वेद के बाद यही एक ऐसा ग्रन्थ है जो मानव जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाला है। इस में मुख्यतः मनुष्य के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन के पहलुओं पर अति गम्भीरता के साथ प्रकाश डाला गया है। वेदों के आदेश अनुकूल, स्वामी जी ने अपने इस ग्रन्थ में सब मनुष्यों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने के लिए विवश किया है क्योंकि मानव विकास और विश्व कल्याण का आधार यही है। वेद के त्रैतवाद सिद्धान्त की भी पुष्टि सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा की गई है अथार्त् तीन अनादि तत्त्वों से सृष्टि की रचना और गति को मान्यता दी गई है याने कि ईश्वर, जीव और प्रकृति।

वैदिक सिद्धान्त का एक बहुत ही महत्वपूर्ण नारा है जो विश्व के सभी मनुष्यों के लिए लगाया जाता है। वह है - **मनुर्भवः**। यह शब्द ऋग्वेद के एक मन्त्रांश में पाया जाता है जो इस प्रकार से है - **मनुर्भवः जनया दैव्यं जनम** अर्थात् हे मनुष्य, तू मनुष्य बन, फिर अन्यों को भी दिव्य मनुष्य बना! यह बात सही है कि जन्म से मनुष्य केवल मनुष्य योनि पाता है। मनुष्य बनने के लिए ही उसे वेद के सिद्धान्तों का सहारा लेना पड़ता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के माध्यम से, विश्व के समस्त मनुष्यों के कल्याण हेतु, उन सिद्धान्तों से सबको अवगत कराया है कि जिनको अपनाने से मनुष्य सही रूप में मनुष्य बन सकता है। एक और नारा है जो ऋग्वेद के एक मन्त्र का अंश है और जिसकी पूर्ति के लिए ही स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की । वह है – **कृणवन्तो विश्वमार्यम्** अर्थात् पूरे विश्व को आर्य बनाओ । परमात्मा के इस आदेश की पूर्ति के लिए सबसे पहले स्वयं को आर्य बनाना आवश्यक है । यह केवल एक नारा ही नहीं बल्कि मानव कल्याण का एक महत्वपूर्ण वैदिक सिद्धान्त भी है । सत्यार्थ प्रकाश वेद के ऐसे ही सिद्धान्तों से भरा पड़ा है - मनुष्य को मनुष्य बनाना और उनसे पूरे विश्व का कल्याण कराना।

मानव जीवन दो तत्त्वों के मेल से चलता है – एक जड़ पदार्थों से बना हुआ यह शरीर और दूसरा चेतना से भरपूर आत्मा। इन दोनों का संचालन करने वाला केवल एकमात्र परमात्मा है जो सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान है और सृष्टिकर्त्ता है। वही मनुष्य के प्रत्येक कर्म का न्यायपूर्वक विपाक निश्चय करता है। वह ईश्वर एक ही है, अनेक नहीं – **एकऽइद्राजा जगतो बभूव**। मनुष्य सदा उसी की उपासना करे - **मही देवस्यः सवितुः परिष्टुतिः** अर्थात् सभी स्तुतियां केवल सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की ही होनी चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश में मानव कल्याण के लिए इस एकेश्वरवाद सिद्धान्त पर बहुत बल दिया गया है। संसार के सभी प्राणी उस निराकार सृष्टिकर्त्ता परमात्मा के दिये हुए जल, वायु, अग्नि, अन्न, औषधि, वनस्पति, सूर्य, चन्द्र आदि का मुफ़्त में प्रयोग करते हैं । इसलिए वेद बार बार हमें याद दिलाता है कि कृतज्ञता प्रकट करनी हो तो उसी परमात्मा की करो, किसी अन्य की नहीं, अन्यथा कृतघ्न कहलाओगे और पाप का हकदार बनोगे। सत्यार्थ प्रकाश भी समस्त मानव को ईश्वर सम्बन्धी यही बातें याद दिलाता है ताकि वह सृष्टिकर्त्ता ईश्वर के स्थान पर किसी अन्य की स्तुति करने के पाप से बच सके। ईश्वर के नियमों का उल्लंघन करने वाले ही कर्त्तव्य विमुख होकर अन्धविश्वास के जाल में फँसकर सच को झूठ और झूठ को सच मान बैठते हैं और विधर्मी कहलाते हैं। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से लोगों को सुकर्मी बनने के लिए प्रेरित किया। मानव कल्याण हेतु यह कितना महान् सिद्धान्त है।

सत्यार्थ प्रकाश का एक और महत्वपूर्ण सिद्धान्त मनुष्य के बौधिक विकास पर आधारित है। एक समय था जब लोगों ने यह गलत धारणा फैला दी थी कि शिक्षा पाने का अधिकार सबको नहीं है। नारी जाति को तो और भी अधिक अज्ञान अन्धकार में रखा जाता था । जब कि वेद निष्पक्ष भाव से सबको ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार देता है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भिक समुल्लासों में मानव विकास के लिए शिक्षा की आवश्यक्ता पर स्वामी जी ने बहुत बल दिया है। ब्रह्मचर्य आश्रम का मूल आधार ज्ञान प्राप्त करना ही बताया गया है। पूर्ण रूप से शास्त्रोक्त ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही मनुष्य को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने का अधिकार होता है। वेद ने पति-पत्नी को वेदवेत्ता और वेदवेत्ती होना आवश्यक बताया है। वह इसलिए ताकि आने वाली पीढ़ी उत्कृष्ट हो, मानव समाज सभ्य हो और जीवन की गति सही दिशा में हो।

अगर गम्भीरता के साथ देखा जाय तो सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित सभी विषयों का सम्बन्ध ज्ञान से ही है। मनुष्य को क्या करना और क्या न करना उचित है, क्या अच्छा और क्या बुरा है, सत्य क्या है और मिथ्या क्या, इन सारे तत्त्वों की पहचान सही ज्ञान होने से ही सम्भव है। स्वामी जी ने अनेकों स्थलों पर बताया है कि मनुष्य को जो दुख, कष्ट, क्लेश, भ्रम, बाधा आदि उत्पन्न होते हैं तथा देश और समाज में जो कुरीतियाँ, अराजकता और भ्रष्टाचार फैलते हैं वे सब अज्ञानता के कारण ही हुआ करते हैं। इसीलिए अपने वेद प्रचार अभियान में स्वामी जी ने सर्वप्रथम समाज को शिक्षित बनाना आवश्यक समझा है। अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि सत्यार्थ प्रकाश का मूल सिद्धान्त पूरे विश्व को शिक्षित करना है। सद्ज्ञान ही मनुष्य को पुण्य की ओर ले जा सकता है जब कि अज्ञानता विनाश की ओर ले जाती है। सत्यार्थ प्रकाश मानव निर्माण एवं कल्याण हेतु वेदों पर आधारित अनेक सिद्धान्तों की पुष्टि करता है। कामना है कि मनुष्य सत्यार्थ प्रकाश पढ़े और ईश्वर प्रदत्त सिद्धान्तों को समझे।

Satyārtha Prakāsh : le chef d'œuvre littéraire de Maharishi Dayanand Saraswati

Satya (la vérité) + *artha* (exposé) + *prakāsh* (la lumière)

Le titre intrigue le lecteur : le pourquoi de cet exposé au sujet de la lumière sur la vérité ? Cet article traite des différents sujets d'une approche distincte de la façon traditionnelle de voir ce chef d'œuvre afin de mieux plonger dans les différents sujets.

UN

- But : la transformation de l'homme en être humain, *manurbhava*.
- Dieu dont le nom principal est Aum (Om).
- L'ami qui ne nous abandonne jamais. Omniprésent, il est en nous, à nos côtés et tout autour de nous à tout moment.
- L'être le plus cher à nous (*Ishtadeva*).
- Le seul maître de tous (*param guru*), la source de toutes les vrais connaissances et ne cesse jamais de nous inspirer vers de bonnes œuvres.

DEUX

- Connaissances : (i) spirituelles (*parā*) et (ii) mondaines (*aparā*)
- Voies de la vie : (i) le droit chemin (*shreya mārga*) et (ii) la voie populaire et des excès (*preya ārga*).
- Etapes de l'univers : (i) l'existence (*shrishti*) et (ii) a dissolution (*pralaye*).
- Forces de la vie - le souffle : (i) inspirer (*shwāsa* – O2) et (ii) expirer (*prashwāsa CO2*).
- Temps pour la méditation (*sandhyopāsnā*) : (i) l'aube et (ii) le crépuscule.
- Contraires : la vérité (*satya*) v le mensonge ou ce qui n'est pas vrai (*asatya*).
- Contraires : la vertu (*dharma*) v l'immoralité ou les vices (*adharma*)
- Contraires : la responsabilité ou le sens du devoir (*kartavya*) v la négligence ou l'irresponsabilité (*akartavya*).
- Contraires : la mort (*mrityu*) v l'immortalité (*amrita*).

TROIS

- Développement total de individu : (i) Caractère (*guna*), (ii) actions (*karma*), et (iii) tempérament ou disposition (*swabhāva*).
- Les actions: (i) pensées (*manasā*), (ii) paroles (*vāchā*), et (iii) actions physiques (*karmanā*).
- Les façons d'agir : (i) soi-même (*krita*), (ii) les suggestions ou l'encouragement, etc. (*kārita*), et (iii) le consentement exprimé ou silencieux (*anumodita*)
- Les catégories d'actions : (i) le bien (*punya*), (ii) le mal (*pāpa*), et (iii) mixte (*mishrita*).
- Les étapes de la vie : (i) l'éveil (*jāgrita*), (ii) le rêve (*swapna*), (iii) le sommeil (*sushupti*).
- Les formateurs : (i) la maman (*māta*), (ii) le papa (*pitā*) et (iii) le professeur ou l'instructeur (*āchārya*).
- Les redevances envers : (i) les parents (*pitri rina*), (ii) les éducateurs, les sages (*rishi rina*), (iii) dieu, la nature (*deva rina*).
- Les éléments de la création : (i) les matières premières (*upādāna kārana*), (ii) les connaissances, la technologie, les outils (*sādhārana kārana*), et le créateur (*nimitta kārana*).
- Les éléments de la création de l'univers : (i) les matières premières (*prakriti*), (ii) les connaissances, la technologie, les outils – dieu, l'omniscient (*sarvajna*), et le créateur - dieu le tout puissant (*sarvashaktimāna*).
- Les éléments de la matière fondamentale (*prakriti*) servant à créer l'univers : (i) la balance, l'harmonie (*sattva*), (ii) la vigueur, l'activité (*rajasa*), et (iii) l'inertie, le chaos (*tamasa*).
- Les choses éternelles : (i) dieu (*ishvara*), (ii) l'âme (*jeeva*), et (iii) la matière fondamentale (*prakriti*).
- Le progrès : (i) matériel (*shāririka*), (ii) moral, spirituel (*ādhyātmika*), et (iii) social (*sāmājika*).
- Les choses essentielles pour le progrès : les vraies connaissances (*shuddha jnāna*), (ii) les bonnes œuvres (*shuddha karma*), et (iii) la croyance ferme, la dévotion sincère (*shuddha upāsanā*).

QUATRE

- Les étapes de l'apprentissage : (i) l'écoute, la lecture, l'observation, etc. (*shravana*), (ii) comprendre, assembler ce qu'on a appris (*manana*), (iii) l'analyse - le pour et le contre (*nididyāsana*), et (iv) l'achèvement, le succès (*sākshātkāra*).
- Les Védas : (i) Rig Véda - les connaissances (*jnāna kānda*), (ii) YajurVéda – les valeurs de la vie, les actions et les initiatives, (*karma kānda*), (iii) Sām Véda - la croyance, la dévotion (*upāsanā kānda*) et (iv) AtharvaVéda – les sciences (vijnāna kānda).
- Les buts de la vie humaine : (i) la vertu, les valeurs (*dharma*) (ii) le progrès économique (*artha*), (iii) bénéficier du progrès économique (*kāma*) et (iv) le salut ou la libération de l'âme du cycle de la naissance et de la mort (*moksha*)
- Les phases de la vie (*āshram*) : (i) le progrès physique par le célibat ou la préservation des forces de la vie et le progrès intellectuel pendant la vie estudiantine (*bramcharya*), (ii) le mariage, chef de famille (*grihasta*), (iii) la retraite, la consolidation de ses connaissances, le progrès spirituel (*vānaprastha*) et (iv) parfaire le progrès spirituel renoncer aux choses mondaines et propager les valeurs (*sanyāsa*).
- Les catégories sociales selon les professions (*varna vyavasthā*) : (i) les prêtres, les éducateurs ou *āchārya* qui prêchent par leur mode de vie exemplaire, ceux qui sauvegardent les valeurs universelles et les savoirs (*brâhmana*), (ii) les dirigeants - communautaires, politiques, des collectivités, des fédérations, etc., et les forces de l'ordre – la police, l'armée (*ksatriya*), (iii) les agriculteurs, éleveurs, les hommes d'affaire, les propriétaires terrien (*vaishya*), et (iv) les travailleurs manuels et autres qui sont au service des autres (*shudras*).
- Attitudes : ressentir (i) l'amitié pour les gens prospère, fortunés (*sukhi*), (ii) la compassion, la générosité pour ceux qui souffrent, sont dans la désolation (*dukhi*), (iii) la joie vers les gens intègres, aimables, bienséants (*punya*) et (iv) l'indifférence vers des gens désagréables, malséants, malhonnêtes (*apunya*). Dans le dernier cas on prie à dieu de les inspirer à se réformer, avoir l'esprit sain et se ramener au bon port.

CINQ

- Les sacrifices suprême (*mahayajna*): (i) la prière, méditation (BrahmaYajna - Sandhyā) (ii) la purification de l'air et l'environnement, et l'aromathérapie, par les oblations ou offrandes de beurre clarifié et herbes médicinales, odoriférantes, doux …etc. au feu (*DevaYajna - agnihotra*), (iv) une attention particulière aux besoins des parents et autres grands-parents qui sont en vie (*BalivaishvaDevaYajna*), et (v) la civilité et bienveillance vers les sages et autres qui nous rend visite à l'imprévu (*AtithiYajna*).
- Les obstacles au progrès : (i) l'ignorance - le manque de connaissances réelles, les notions incomplètes et / ou contradictoires (*avidyā*), (ii) s'identifier qu'au corps (*asmitā*), (iii) l'attachement à ceux qui nous donne du plaisir (*rāga*) (iv) l'aversion, la haine pour ceux qui nous fait souffrir (*dvesha*), et (v) l'instinct que nous vivrons toujours, la frayeur de mourir (abhinivesha).
- Le bien-être dans la vie (*jeevan*) et: (i) personnel (*vyaktigata*), (ii) familial (pārivārika), (iii) social (*sāmājika*), (iv) national (*rāshtriya*), et universel (*vaishwika*).
- L'intelligence (*buddhi*) : (i) l'ignorant (*manda*), (ii) le bon sens (*sada*) (iii) l'esprit qui distingue la vérité du mensonge, la vertu de l'immoralité, le sens du devoir et la négligence (*medhā*) (iv) la tranquillité d'esprit et des émotions (*ritambhara*), et (v) le savoir de saisir les inspirations divines ou au fond de soi-même (*prajnā*).
- Les normes à reconnaitre la vérité : conforme (i) aux qualités, actions et particularités de dieu, conforme aux Védas ; (ii) à l'ordre et aux règles universels, (iii) aux enseignements des sages ou des gens de savoirs corrects et justes, (iv) à la pureté de l'âme qui pense, parle et agit de la même façon qu'il veut que les autres agissent vers lui, et (v) aux normes des 8 preuves, entre autres ce qu'on a aperçu, déduit, la comparaison…

…à suivre

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
ARYA SABHA MAURITIUS,Cell : 5795 0220

Bibliographie : Satyārtha Prakāsh par Maharishi Dayānand Saraswati

पृष्ठ २ का शेष भाग

अपनी पुस्तक 'हिन्दी इन मॉरीशस' में बखोरी (१९६७, pp 46) ने इस बात का उल्लेख किया है कि सन् १९१० में मणिलाल डॉक्टर ने कुछ सिख जवानों के साथ मिलकर आर्य समाज की स्थापना की थी और १९११ में यहाँ से 'क्लूनी कासल' को रवाना होते हुए। उन्होंने अपना प्रेस एक साप्ताहिक पत्र 'आर्य पत्रिका' प्रकाशित करने के लिए आर्यसमाज को सौंप दिया। इसी पुस्तक में चंद पृष्ठों के बाद श्री बखोरी बताते हैं कि 'मोरिशस आर्य पत्रिका' आर्यसमाज का प्रथम पत्र था और १५ अक्तूबर १९११ को इसका प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। दो वर्ष पश्चात् यह पत्र प्रकाशित होना बन्द हो गया।

रामशरण (२००४, पृ० ४२१) के मतानुसार 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का प्रकाशन १ जून, १९११ से शुरू हुआ था और १९१३ में यह बंद हो गया था।

श्री मुनीन्द्रनाथ वर्मा 'आर्य पत्रिका' के प्रकाशन में डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज का भी योगदान स्वीकारते हुए कहते हैं कि "अपने सहयोगियों को साथ लेकर शाँ-दे-मार्स में सभा के लिए डॉ० भारद्वाज ने ज़मीन भी खरीदी थी। १ जून १९११ में प्रकाशित होने वाले 'आर्य पत्रिका' को आगे बढ़ाने में उन्होंने अपना पूर्ण सहयोग दिया।" (M.N. Varma 1998, pp 17) इन्द्रनाथ (२००९, पृ० २००) 'आर्य पत्रिका' के बंद होने के बारे में कुछ नया बताते हैं। सन् १९१६ में वे इस पत्र का बंद होना मानते हैं।

'मोरिशस आर्य पत्रिका' को लेकर कई सवाल उठाये जाते हैं – इसके साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक होने पर, इसके द्विभाषी या त्रैभाषी होने पर, इसकी प्रकाशन-तिथि पर, इसके अस्तित्व पर; ये प्रश्न स्वाभाविक हैं, क्योंकि आँखों से ओझल होने से उसके अस्तित्व को स्वीकारना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। परन्तु पंडित आत्माराम विश्वनाथ, पंडित काशीनाथ किष्टो, श्री रामधन पूरण, पंडित मोहनलाल मोहित जैसे आर्य पुरुष बिना 'मोरिशस आर्य पत्रिका' पढ़े या देखे, अपने लेखों में इसका उल्लेख यूँ ही क्योंकर करते! और यदि सन् १९११ में इसका प्रकाशन होना आरंभ हो गया था तो निश्चित रूप से हिन्दू का भाग्य जाग गया था। हिन्दू-उत्थान का प्रारंभ यहाँ से माना जा सकता है। **क्रमशः**

43rd Anniversary of Allée Brillant Hindi School

Sunday 05 May 2016 : The anniversary if the Allée Brillant Hindi School of was celebrated at 13.00hrs. under the aegis of Arya Sabha in collaboration with Plaines Wilhems Arya Zila Parishad.

Were present Hon. Nandcoomar Bodha, Minister of Infrastructure and Land Transport and members of Arya Sabha Mauritius, namely- the President Dr O.N. Gangoo, the Secretary Mr S. Peerthum, and the Assistant Secretaries Shri A. Gowd and Shrimati Yalini.

The program started with yajna performed by Pandita Rajvansh Saullick and was followed by attractive programs by the school children to whom prizes and certificates were awarded for their academic achievement.

The Minister praised Arya Sabha for the good work in the promoting education and culture. The Mandir was packed with parents who show keen interest in the education of their wards.

S. Peerthum

सत्यार्थ प्रकाश मास

आर्य सभा की ओर से जब से जून का महीना 'सत्यार्थ प्रकाश मास' घोषित हुआ है तब से हर वर्ष जून के महीने के प्रारम्भ में एक निश्चित दिन में हम आर्य भवन में यज्ञ द्वारा महीने की शुरुआत करते हैं।

इस साल शनिवार ता० ०४.०६.१६ को दिन के एक बजे पुरोहित मण्डल की मासिक बैठक के बाद यज्ञ का अनुष्ठान करके हमने भजन एवं भाषणों का कार्यक्रम पेश किया उस समारोह में पंडितों एवं पुरोहिताओं के अलावा सभा के अन्तरंग सदस्यों के साथ टापू भर के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

भाषण दाताओं में न केवल प्रधान एवं सभा मंत्री थे बल्कि नवयुवक संघ के प्रतिनिधि और महिला मण्डल की बहनों द्वारा भी भजन और भाषण हुए। नव गठित पुरोहित मण्डल की मंत्रिनी श्रीमती सत्यम चमन का भी भाषण हुआ। जब से महिला मण्डल सेवारत है श्रीमती चमन दूसरी मंत्री है श्रीमती हरगोबिन ने पहली बार मंत्री का पद सम्भाला था।

उसी मौक़े पर एलान किया गया कि मोरिशस भर के आर्य मंदिरों में सत्यार्थ प्रकाश पर भाषण एवं भजन होना चाहिए। हरेक ज़िले में एक भव्य कार्यक्रम रखना ज़रूरी है।

एस. प्रीतम

बन्धुर्नो माता पृथिवी महीयम्।
(अथर्व ९.१०.१२)

यह विशाल पृथिवी हमारी माता और बन्धु है।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038